सत्र 13, व्यवस्थाविवरण और कैनन

डॉ. सिंथिया पार्कर

यह डॉ. सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 13, व्यवस्थाविवरण और कैनन है।

परिचय

हमने अंतिम अंतिम अध्यायों को छोड़कर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पूरी कर ली है, जो कि जो कुछ हो रहा है उसके अंतिम भाग में हमारे अंतिम नोट्स की तरह होंगे। चूंकि हमने पहले ही कानून संहिता के अंत और इन अनुबंध अनुसमर्थन समारोहों, और इन घटनाओं पर चर्चा की थी जिनमें इस्राएली भूमि पर कदम रखने के बाद भाग लेने जा रहे हैं, यह हमारे लिए बस एक पल के लिए रुकने के लिए एक अच्छी प्राकृतिक जगह है और सोचें कि हमने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से क्या सीखा है।

व्यवस्थाविवरण के विषय

इसलिए, व्यवस्थाविवरण हमें कई अलग-अलग विषय देता रहा है। निःसंदेह, महत्वपूर्ण बातों में से एक यह है कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ संबंध में है, और उनके बीच एक वाचा है। और इसलिए, हमारे पास ये शर्तें हैं। ये वो चीजें हैं जो आपको करनी चाहिए ताकि चीजें आपके साथ अच्छी तरह से चलें। और यदि आप उस वाचा और कानून का पालन करते हैं जो भगवान ने अपने लोगों को दिया है तो हमारे पास देश में सब कुछ अच्छा हो सकता है, इसका एक दृश्य है। हमने देखा है कि इस्राएली विश्व मंच पर ऐसे हैं कि वे कभी भी बाहर जाकर विश्व पर विजय प्राप्त नहीं कर सकेंगे। उनकी ज़मीन उसका समर्थन नहीं करेगी. लेकिन दुनिया उनके माध्यम से आती है, और इस्राएलियों और उनके आसपास के लोगों के बीच बातचीत होती है।

तो, इनमें से कुछ अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए, यह इतना आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि व्यवस्थाविवरण हिब्रू बाइबिल की कई पुस्तकों से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है, और मैं विशेष रूप से कुछ भविष्यवाणी पुस्तकों के साथ कहूंगा।

व्यवस्थाविवरण और ऐतिहासिक आख्यान

अब हमने पहले उल्लेख किया था जब हम इतिहास, व्यवस्थाविवरण के लेखन के बारे में बात कर रहे थे। और मैंने मार्टिन नोथ नाम के एक सज्जन का उल्लेख किया। उनका विचार यह था कि व्यवस्थाविवरण को यहोशू से लेकर राजाओं तक जाने वाली ऐतिहासिक पुस्तकों की प्रस्तावना या परिचय माना जाता है क्योंकि ऐतिहासिक कथाओं में बहुत सारे संदर्भ हैं, जहां लोगों को उनके आधार पर अच्छा या बुरा कहा जाता है। वे परमेश्वर के साथ अनुबंध का कितनी अच्छी तरह पालन कर रहे हैं।

व्यवस्थाविवरण और होशे

तो, इस तरह, हम ऐतिहासिक आख्यानों को कैसे पढ़ते हैं, इसमें व्यवस्थाविवरण बेहद प्रभावशाली है। लेकिन कुछ अन्य पुस्तकों के बारे में क्या? तो, हमारे पास भविष्यवक्ताओं द्वारा लिखित लेखों के समूह हैं। मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करना चाहता हूं और आपके साथ इस पर विचार करना चाहता हूं कि ये भविष्यवक्ता जिन विषयों को सामने लाते हैं उनमें से कितने ऐसे विषय बन जाते हैं जिन्हें हम पहले ही सीख चुके हैं, हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं और इस अध्ययन के कारण आपको वे परिचित लगने चाहिए। हमने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में किया है।

सबसे पहले मैं होशे का उल्लेख करना चाहूँगा। तो, होशे एक है, और हम उसे एक छोटा पैगम्बर कहते हैं, जिसका यह कदापि मतलब नहीं है कि उसका मंत्रालय छोटा था। इसका मतलब सिर्फ इतना है कि वह वास्तव में बड़े भविष्यवक्ताओं में से एक नहीं है जिसके नाम के साथ काम का एक बड़ा संग्रह जुड़ा हुआ है। तो, बड़े भविष्यवक्ता या प्रमुख भविष्यवक्ता यशायाह, यिर्मयाह और यहेजकेल जैसे लोग होंगे। होशे बारह की पुस्तक से संबंधित है। तो, होशे के लेखन को एकत्र किया गया है, या होशे की कही बातों को एकत्र किया गया है और लिखा गया है।

हम नहीं जानते कि होशे कहाँ से है। हमारे पास ऐसा कोई शहर नहीं है जहां से वह है, लेकिन हम जानते हैं कि वह इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य से है। तो, ऐतिहासिक रूप से हम उस समय पर हैं जहां उत्तरी साम्राज्य और दक्षिणी साम्राज्य पहले ही एक दूसरे से अलग हो चुके हैं। तो, होशे उन भविष्यवक्ताओं का हिस्सा है जिन्हें इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य में भेजा गया है।

वह जिन विषयों को लेकर आता है और जिनके बारे में वह बात करता है उनमें से एक है ईश्वर की दिव्य करुणा। तो, होशे के पहले कुछ अध्याय इस बारे में हैं कि कैसे ईश्वर अपने लोगों के प्रति स्थायी प्रेम रखता है, तब भी जब वे उससे दूर हो जाते हैं। हमें यह स्वयं होशे और उसकी वेश्या पत्नी के भीतर दिखाई देता है कि उसे जाकर विवाह करने के लिए बुलाया गया है। इसलिए होशे के जीवन में भी और उससे प्यार करने और उससे शादी करने की उसकी दृढ़ता इस बात का उदाहरण मानी जाती है कि कैसे भगवान अपने लोगों के साथ रिश्ते में रहते हैं, तब भी जब वे जाते हैं और अन्य देवताओं का अनुसरण करते हैं।

होशे में हमारा यह विचार भी है कि ईश्वर को भूलकर अन्य देवताओं के पीछे चले जाओ, और यह विचार कि ईश्वर अपने लोगों का पीछा करना जारी रखेगा। इसलिए, होशे ने अन्य देवताओं की पूजा को लाने और अपनाने के लिए इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य को फटकार लगाई।

अन्य देवताओं के लिए बहुत सारे अभयारण्य और अन्य देवताओं के लिए बहुत सारी वेदियाँ बनाने के लिए होशे ने उत्तरी साम्राज्य को बहुत जल्दी डांटा। यह भी विचार है कि लोगों के साथ घुलने-मिलने से समस्याएँ होती हैं। तो, ये सभी चीजें हैं जिनसे व्यवस्थाविवरण ने भी निपटा है। यह विचार कि केवल एक ही ईश्वर है और वह अकेला ईश्वर है, कि लोगों की चुनी हुई जगह पर एक ही वेदी होनी चाहिए, और अन्य लोगों के समूहों के साथ घुलना-मिलना नहीं चाहिए, ऐसा न हो कि उनके दिल या इस्राएलियों के दिल दूर हो जाएँ .

होशे भी इस बात की बात करता है और इस बात पर जोर देता है कि यहोवा के अलावा कोई अन्य ईश्वर नहीं है। हेसद वही है जो वांछित है। तो हेसेद वह हिब्रू शब्द है जिसका संबंध वाचा के प्रेम से है। इससे भी अधिक विस्तृत, यह प्रेम-कृपा है, यह असुविधाजनक प्रेम है। यह प्रेम का वह प्रकार है जिसके बारे में दस आज्ञाओं में कहा गया है कि ईश्वर को अपने लोगों के प्रति असीम

प्रेम है। वह स्थायी प्रेम, असुविधाजनक प्रेम। और होशे की पुस्तक में, हमारे पास केवल एक ही चीज़ है जो ईश्वर चाहता है वह है बदले में प्रेम। यह परिचित लगता है क्योंकि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में, हमें बार-बार यह दोहराव मिलता है कि ईश्वर अपने लोगों से जो चाहता है वह है उससे प्रेम करना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना। तो, इसने उस प्रकार के प्रेम से परहेज किया है जो वहां संप्रेषित होता है।

हमारे पास इस दिव्य करुणा के साथ-साथ यह भी है, जिसे हम होशे की शुरुआत में ही पति-पत्नी के रिश्ते के रूप में देखते हैं। होशे के बाद के अध्याय उस प्रेम के बारे में बात करते हैं जो ईश्वर अपने पुत्र को देता है। तो, फिर से, हमारे पास इज़राइल है, जो ईश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट होता है, और ईश्वर के प्रेम का उदाहरण एक पिता के अपने पुत्र के समान है। यह भी व्यवस्थाविवरण के बहुत समान है, यहां तक कि व्यवस्थाविवरण के शुरुआती अध्यायों से भी, जहां जब मूसा उनकी कहानी के इतिहास का अभ्यास करने के बारे में बात कर रहा है, तो वह कहता है, यहां तक कि जंगल में भी, भगवान पिता थे जिन्होंने अपने बेटे को उठाया और ले गए जंगली इलाका। तो, यह विचार कि ईश्वर और उसके लोगों के बीच का रिश्ता और प्यार पिता-पुत्र के रिश्ते की तरह है, होशे में दिखाई देता है।

और हमारे पास मूसा के गीत पर विचार या मूसा के गीत की गूँज है, जिसे हमने अभी तक कवर नहीं किया है, लेकिन हम अगले व्याख्यान में करेंगे। लेकिन मूसा और होशे के गीत में, वास्तव में बहुत करीबी समानताएँ हैं।

हम आगे अमोस के बारे में बात करने जा रहे हैं, लेकिन इससे पहले, हम होशे के बारे में बात करना बंद करते हैं, मैं सिर्फ यह उल्लेख करना चाहता हूं कि होशे और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के बीच बहुत सी चीजें समान हैं - अमोस में भी। अमोस लगभग होशे के ही समय का है। इसलिए, क्योंकि होशे और अमोस का व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के साथ इतना घनिष्ठ संबंध है, कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि होशे और अमोस, ये लेख और इन दो भविष्यवक्ताओं का मंत्रालय पहले अस्तित्व में थे और व्यवस्थाविवरण वास्तव में होशे और अमोस से भाषा उधार ले रहा है । जैसा कि व्यवस्थाविवरण लिखा जा रहा है। यह उन जटिल कारकों में से एक है जो हमें

यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक किसने लिखी और वास्तव में इसे किसने लिखा।

अब, यह भी उत्सुकता की बात है कि होशे इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य से है। और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का कुछ हद तक उत्तरी फोकस है। इसलिए, जैसा कि हमने इन व्याख्यानों में लगातार व्यवस्थाविवरण और चुने हुए स्थान के बारे में बात की है, मैंने चुने हुए स्थान का नाम नहीं दिया है। मैं वास्तव में नहीं सोचता कि व्यवस्थाविवरण चुने गए स्थान के सटीक स्थान के नाम को महत्वपूर्ण मानता है। मुझे लगता है कि व्यवस्थाविवरण यह कहना चाह रहा है कि यह चुनी हुई जगह, चाहे वह कहीं भी हो, भूमि की संरचना इसी प्रकार होती है। तो, केंद्र में एक जगह और एक भगवान है, और हर कोई उस छतरी के नीचे आता है। लेकिन कई विद्वान, और यदि आप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर टिप्पणियाँ पढ़ते हैं, तो कहेंगे कि चुनी गई जगह, जाहिर है, यरूशलेम है क्योंकि मंदिर अंततः यरूशलेम में बनाया जा रहा है। और अक्सर, टिप्पणियों में, चुने गए स्थान वाक्यांश का उपयोग करने के बजाय, वे वास्तव में "यरूशलेम" शब्द का उपयोग करेंगे।

ख़ैर, मैं उस तर्क से सहमत नहीं हूं। वह और तथ्य यह है कि जब व्यवस्थाविवरण भूमि में जाने और वाचा की पुष्टि करने के बारे में बात कर रहा है, तो वे विचार जिनके बारे में हमने पिछले व्याख्यान में बात की थी और हमने व्यवस्थाविवरण 11 से संबंधित व्याख्यान में बात की थी कि वाचा उत्तर एबाल और गेरिज़िम से बनी है इज़राइल के क्षेत्र के उत्तरी साम्राज्य में हैं। वास्तव में भूमि के उत्तरी भाग पर काफी जोर दिया गया है।

और इसलिए जो लोग कहते हैं कि राजा के रूप में योशिय्याह के समय तक व्यवस्थाविवरण नहीं लिखा गया था, वे यह पहचानने में असफल हो रहे हैं कि भूमि के उत्तरी भाग पर बहुत अधिक जोर दिया गया है क्योंकि योशिय्याह के समय तक भूमि का उत्तरी भाग अश्शूर द्वारा पहले ही निर्वासन में ले जाया गया था।

अब संभावित रूप से, और यह एक बहुत ही सामान्य तर्क है, कि शायद जिन लोगों ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक लिखी या वास्तव में शब्दों को अंतिम रूप दिया और इसे लिखा, वे इसराइल के मूल उत्तरी साम्राज्य के पुजारी और लेवियों या लोगों का एक शास्त्रीय संग्रह थे, जो

बाद में यहां चले गए। जेरूसलम. और इसलिए, फिर उन्होंने योशिय्याह के सुधार को प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न कानूनों को लिखना शुरू कर दिया। तो, ये सभी संभावनाएँ हैं। लेकिन फिर, उत्तर पर ध्यान केंद्रित करने और इस बारे में बात करने के लिए कि उत्तर कितना प्रभावशाली है और व्यवस्थाविवरण भूमि के उत्तरी क्षेत्रों की उपेक्षा नहीं करता है, हमारे पास होशे है, जो उत्तर से है, इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य में काम करता है और उसके पास बहुत कुछ है व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से घनिष्ठ संबंध।

तो, या तो होशे का लेखन पहले आता है और व्यवस्थाविवरण के लेखन को बहुत प्रभावित करता है, या व्यवस्थाविवरण पहले से ही अस्तित्व में है। इसे पहले ही संहिताबद्ध किया जा चुका है, और कुछ लोग संयुक्त राजशाही के दौरान या राज्य के शुरुआती हिस्सों में तर्क देंगे जब सभी इज़राइलियों को अभी भी एक माना जाता था।

हालाँकि, आपको केवल यह अवगत कराना है कि होशे का, एक उत्तरी भविष्यवक्ता के रूप में, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के साथ बहुत गहरा संबंध है। ऐसा लगता है कि वे एक-दूसरे को जानते हैं।

व्यवस्थाविवरण और अमोस

तो, अमोस के बारे में क्या? अमोस भी, होशे के ही समय में था, सिवाय इसके कि अमोस यहूदा के दक्षिणी साम्राज्य से आता है। तो, वह तेकोआ से आता है, एक शहर जो बेथलेहम के ठीक दक्षिण की ओर है। अमोस कोई पेशेवर भविष्यवक्ता नहीं है. वह एक किसान और चरवाहा है, और फिर भी भगवान ने उसे बुलाया और कहा कि इसराइल के उत्तरी साम्राज्य को यह संदेश देने के लिए उत्तर की ओर जाओ।

अमोस की पुस्तक में, हम कई अलग-अलग विषय देखते हैं। इस बात की बार-बार पुनरावृत्ति कि कैसे इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया गया, और हमें भूमि दी गई। आपको यह बहुत पुराना विषय लगना चाहिए क्योंकि यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में बहुत कुछ दर्शाया गया है।

अमोस ने इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य को अपनी ताकत के बारे में गलत घमंड करने के लिए फटकार लगाई। और साथ ही, व्यवस्थाविवरण यह कहने में सावधानी बरतता है, मत सोचो; याद रखें जब हमने व्यवस्थाविवरण 9 से अपना छोटा गणित सूत्र तैयार किया था, तो यह मत सोचिए कि आप अपनी धार्मिकता के कारण इसमें जा रहे हैं क्योंकि यदि आप वास्तव में सही ढंग से याद करते हैं, तो आप अतीत में विद्रोही रहे हैं। आप यहां इसलिए हैं क्योंकि ईश्वर ही वफादार है, और इसलिए प्रेम से ईश्वर को जवाब दें। खैर, अमोस इसे लेता है और कहता है, ठीक है, आप इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य, आप गलत तरीके से घमंड कर रहे हैं। आप उस चीज़ का श्रेय ले रहे हैं जिसके लिए आप श्रेय के पात्र नहीं हैं।

उन्हें एकमात्र ईश्वर, यहोवा के बाहर अन्य देवताओं की पूजा करने के लिए भी डांटा जाएगा। और अमोस के दिल में, यही कारण है कि मुझे अमोस की किताब इतनी पसंद है, सामाजिक नैतिकता है। यह उनके संदेश के केंद्र में है, और हम देखते हैं कि वह इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य की सामाजिक नैतिकता से कितना परेशान हैं।

इसलिए, इस समय इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य में, उन्होंने खुद को इस तरह से संरचित किया है कि राजा शिखर पर है, शीर्ष पर, जहां समुदाय से बहुत भारी श्रद्धांजलि और दशमांश निकाले जा रहे हैं। यह समाज के शीर्ष, ऊपरी स्तर पर मौजूद लोगों के कुछ चुनिंदा समूहों के लिए बेहद समृद्ध आजीविका प्रदान कर रहा है। और अमोस ने इसकी बहुत कड़ी भर्त्सना की है।

खैर, फिर से, व्यवस्थाविवरण के बाद, हमने अध्याय 15 में और फिर 19 और 25 में बिखरे हुए कुछ अध्यायों में बहुत सारे अलग-अलग कानून देखे हैं जो उचित प्रकार की सामाजिक नैतिकता के बारे में बात करते हैं। ऐसा नहीं है कि हर किसी के पास समान संपत्ति होनी चाहिए, लेकिन आपको समाज के परिधि पर मौजूद लोगों के प्रति सचेत रहना होगा। अमोस ने उसका पालन न करने के लिए लोगों को फटकार लगाई। अमोस भी इस विचार को दोहराने जा रहा है कि यह धार्मिकता और धार्मिकता है जिसका हम अनुसरण कर रहे हैं। हमने इसे व्यवस्थाविवरण 16 में सुना है।

अमोस भी उस त्रयी को दोहराने जा रहा है, "आर" शब्द जिसके बारे में हमने व्यवस्थाविवरण के अपने आखिरी व्याख्यान में बात की थी: पश्चाताप, वापसी और बहाली संभव है। तो, अमोस एक सकारात्मक नोट पर समाप्त होता है; वहाँ पुनर्स्थापना संभव है। और इसका मतलब है उन चीजों से मुंह मोड़ना जो आप गलत तरीके से कर रहे थे और अपने उस सच्चे ईश्वर को याद करना जो आपको मिस्र से बाहर लाया था।

व्यवस्थाविवरण और मीका

खैर, केवल अमोस ही नहीं बल्कि मीका भी। इसलिए, मीका को भी छोटे पैगंबरों में से एक माना जाता है। मीका यहूदी तलहटी से है। वह यरूशलेम के पश्चिम में स्थित शेफेला के निचले इलाके से है। उनका संदेश मुख्य रूप से यरूशलेम के शासकों के लिए है। इसलिए, उनका ध्यान दक्षिणी साम्राज्य पर है।

उनका एक बड़ा संदेश यह है कि नेता गरीबों की मजबूरी का शिकार हो रहे हैं। हमारे पास मूर्तिपूजा और छवियों के बारे में भी विचार हैं जो यरूशलेम के भीतर भी समस्याग्रस्त रहे हैं। इसलिए, यरूशलेम में मंदिर के बाहर भी, यहां तक कि यरूशलेम में समुदाय के भीतर भी, मूर्ति पूजा को लेकर समस्याएं चल रही हैं।

खैर, हमने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में न केवल अन्य देवताओं के खिलाफ बल्कि नेतृत्व के विचार पर भी कड़ा प्रतिबंध देखा है। जब हमने नेताओं के बारे में बात की, तो हमने नेताओं के जनता के बीच और जनता के बीच होने की बात की। स्तंभ, मजबूत स्तंभ होना, इस बात का उदाहरण है कि सभी लोगों को ईश्वर के सामने कैसे कार्य करना चाहिए। यह नेतृत्व की ऐसी व्यवस्था नहीं है जो एक राजा को शीर्ष पर रखकर बनाई गई हो। वास्तव में, व्यवस्थाविवरण राजा की भूमिका को कुछ हद तक कम कर देता है और उसे उसके भाइयों के बीच डाल देता है।

व्यवस्थाविवरण और यशायाह

तो, हम उस विषय को मीका और यशायाह में भी देखना शुरू करते हैं। तो मीका और यशायाह समकालीन हैं। इसलिए, यदि हम यशायाह को देखें, जो यहूदा के दक्षिणी साम्राज्य से भी

बात कर रहा था और मुख्य रूप से यरूशलेम के लिए लिख रहा था, तो हम फिर से परिचित विषयों को देखते हैं। यहोवा ही एकमात्र ईश्वर है, और लोगों को ईश्वर का अनुसरण न करने के लिए डांटा जाता है। यशायाह का कहना है कि वाचा के कानून का घोर उल्लंघन हो रहा है और लोगों को फटकार लगाता है क्योंकि वे माध्यमों और झूठे भविष्यवक्ताओं, भविष्यवक्ताओं और भविष्य के भविष्यवक्ताओं का उपयोग कर रहे हैं। और यह सब इस्राएली लोगों के लिये वर्जित किया गया है।

वह अन्याय और दमनकारी कानून की भी निंदा करते हैं। यशायाह, और मुझे नहीं लगता कि मेरे पास यह है, लेकिन यशायाह लोगों को यह भी प्रोत्साहित करता है कि यह कोई अनुष्ठानिक बलिदान नहीं है जिसकी ईश्वर को तलाश है। यह कार्य ही हैं जो लोगों के हृदय को प्रदर्शित करते हैं।

हमने इसे व्यवस्थाविवरण में देखा है, जहां व्यवस्थाविवरण हमेशा लोगों को कानून को नहीं, बल्कि यह याद रखने के लिए कहता है कि ईश्वर कौन है। और फिर उस स्मृति पर इस तरह से प्रतिक्रिया दें जैसे कि ईश्वर से प्रेम करता है और उसकी आराधना करता है। इसलिए, कार्रवाई का आह्वान ईश्वर की नकल करने की कार्रवाई है, न कि उनके आसपास के राष्ट्रों की।

यशायाह में, हमें यह भी विचार मिलता है कि सिय्योन या यरूशलेम वास्तव में सदोम और अमोरा जैसा दिखता है। तो, हमने व्यवस्थाविवरण के अंतिम अध्याय में उस चेतावनी को देखा जिसे हमने 29 और 30 में देखा था। विचार यह है कि इज़राइल की भूमि, शापों में से एक यह है कि यह गंधक और नमक की भूमि में बदल जाएगी। और यह सदोम और अमोरा की याद दिलाता है और उस अर्थ का एक हिस्सा उन शहरों में लोगों का उत्पीड़न है।

यिर्मयाह कह रहा है कि आप भ्रमित न हों क्योंकि यरूशलेम सदोम और अमोरा जैसा दिख रहा है। इसलिए वह वहां उसी संदर्भ बिंदु का उपयोग कर रहा है। यशायाह भी एक बेहतर दिन की प्रतीक्षा कर रहा है, जो कि पुनः बहाली की आशा है जिसे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अंत में देखते हैं। और फिर, मूसा का गीत, जो अगले व्याख्यान में होगा, यशायाह में भी लगभग शब्द-दर-शब्द है।

व्यवस्थाविवरण और यिर्मयाह

अब महान भविष्यवक्ताओं में से एक और यिर्मयाह है। और यिर्मयाह के समय और यिर्मयाह की बातों और कार्यों और उपदेशों को लिखे जाने से, ऐसा लगता है कि कम से कम इस समय तक व्यवस्थाविवरण को लिख लिया गया था या संहिताबद्ध कर दिया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि यिर्मयाह को व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का ज्ञान है। तो फिर, हमें इस पुस्तक में आगे-पीछे कई अलग-अलग प्रतिबिंब मिलते हैं।

यिर्मयाह 7 एक महान अध्याय है जो बताता है कि कैसे वाचा वास्तव में सशर्त है। तो, हे भगवान, अपने लोगों के लिए प्रेम की वाचा बांध सकते हैं। वह बहुत दृढ़ है, सिवाय इसके कि यह अनुबंध जिस पर वे सहमत हुए हैं वह उन लोगों के साथ आता है जिन्हें एक विशेष तरीके से भगवान को जवाब देने के लिए कार्य करने की आवश्यकता होती है। यिर्मयाह 7 में, हम पाते हैं कि यरूशलेम के निवासी केवल इस तथ्य पर भरोसा कर रहे थे कि मंदिर यरूशलेम में है, और इसलिए, बेबीलोनवासी उन्हें नहीं मारेंगे क्योंकि भगवान उनके घर को नष्ट नहीं होने देंगे। यिर्मयाह का कहना है कि भगवान को अपने घर की उतनी परवाह नहीं है जितनी वह आपके दिल की परवाह करता है। और इसलिए, यदि आप बाहर जा रहे हैं और आप एक दिन में इन सभी आज्ञाओं को तोड़ रहे हैं और दिन के अंत में, मंदिर में जा रहे हैं और कह रहे हैं, "हे, लेकिन भगवान यहाँ है।" यह आपको बचाने के लिए पर्याप्त नहीं है।

यिर्मयाह अक्सर इस विचार को दोहराता है कि ईश्वर जो चाहता है वह यह है कि लोगों के दिलों का खतना किया जाए और हृदय की कोमलता में वाचा का आंतरिक अंकन हो। यिर्मयाह ने सब्बाथ विश्राम के बारे में भी काफी चर्चा की। वास्तव में, यिर्मयाह का कहना है कि बेबीलोन में लोगों के निर्वासन का एक हिस्सा इस तथ्य के कारण है कि लोग विश्राम और भूमि का पालन नहीं कर रहे हैं, जो यिर्मयाह की पुस्तक में एक चरित्र में बदल जाता है; भूमि जीवित और जीवंत है, लेकिन उस भूमि ने अपने विश्राम का आनंद नहीं उठाया है। इसलिए, लोगों को निर्वासन में ले जाया जाएगा।

यिर्मयाह लोगों को गरीबों का फायदा उठाने के बारे में भी चेतावनी देता है। यिर्मयाह यरूशलेम की तुलना सदोम और अमोरा से भी करता है। और यिर्मयाह "दूध और मधु की भूमि" वाक्यांश का उपयोग करता है। अब, वह वाक्यांश वास्तव में पेंटाटेच में एक सामान्य वाक्यांश है। हम इसे निर्गमन की पुस्तक में देखते हैं; हम इसे संख्याओं में कुछ बार देखते हैं। व्यवस्थाविवरण को यह वाक्यांश पसंद है और वे जिस भूमि पर वे जा रहे हैं उसकी गुणवत्ता के बारे में बात करने के लिए इसका काफी उपयोग करते हैं। हम अब इस वाक्यांश को ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से नहीं देखते हैं। इसका उपयोग नहीं किया जाता. यह एक तरह से फैशन से बाहर हो जाता है। एक अलग वाक्यांश है जिसका उपयोग भूमि की समृद्धि और अच्छा प्रदर्शन के लिए संक्षिप्त वाक्यांश के रूप में किया जाता है। परन्तु यिर्मयाह उसे पुनर्स्थापित करता है और उसे वापस उधार लेता है। और फिर, वह "दूध और शहद से भरी भूमि" या "दूध और शहद से फूटने वाली या टपकने वाली भूमि" शब्द का उपयोग करता है। जेरेमिया 2 का संबंध मूसा के गीत से भी है।

व्यवस्थाविवरण और स्तोत्र, और नीतिवचन

अब हम भजनों के माध्यम से आगे बढ़ सकते हैं, हम नीतिवचन के माध्यम से जा सकते हैं, और हम उन संबंधों के बारे में भी बात कर सकते हैं। तो, बहुत ही समान थीम दिखाई देती हैं। एक, यदि हम नीतिवचन की पुस्तक को देखें, तो नीतिवचन एक शिक्षा है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपी जाती है। आपकी बुद्धि कहां से आई? ये बुद्धिमान बातें हैं और कैसे कार्य करना है और कैसे कार्य नहीं करना है। यह व्यवस्थाविवरण में कानून संहिता के समान है और अध्याय 6 और 11 में व्यवस्थाविवरण के समान ही है। यह कहना बहुत विशिष्ट है कि माता-पिता को अपने बच्चों को सिखाना चाहिए कि इन महत्वपूर्ण शिक्षाओं को पारित करना और सौंपना एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। व्यवस्थाविवरण 4 कहता है, "ये शिक्षाएँ ही तुम्हारी बुद्धि हैं।" इसलिए नीतिवचन के भीतर, हमारा न केवल बच्चों को पढ़ाने पर जोर है, बल्कि यह मान्यता भी है कि इन आज्ञाओं में ये क़ानून आपकी बुद्धि हैं और एक पूर्ण मानव अस्तित्व की ओर ले जाते हैं।

नीतिवचन बच्चों के अनुशासन के बारे में भी बात करते हैं, जहां अनुशासन का विचार स्वयं को नियंत्रित करने, अपनी इच्छाओं पर शासन करने का एक आत्म-संशोधन है। व्यवस्थाविवरण भी ऐसा ही करता है। व्यवस्थाविवरण इसके बारे में बात करता है जैसे एक पिता अपने बच्चे को अनुशासित करता है, जैसे ईश्वर, पिता, अपने बच्चे, इज़राइल के पुत्र को अनुशासित या प्रशिक्षित कर रहा है।

नीतिवचन माता-पिता और बच्चों के बीच मानवीय संबंधों के रूप में इसके बारे में बात करते हैं।

व्यवस्थाविवरण और नया नियम

नया नियम भी काफी हद तक व्यवस्थाविवरण से मिलता जुलता है। और इसका उल्लेख मैंने शुरू से ही किया है क्योंकि मैंने कहा था कि हमें व्यवस्थाविवरण का अध्ययन क्यों करना चाहिए इसका एक कारण यह है कि यह नए नियम में पुराने नियम की चार सबसे अधिक उद्धृत पुस्तकों में से एक है। इनमें से कुछ का मैंने पहले ही उल्लेख किया है क्योंकि हम व्यवस्थाविवरण में विभिन्न व्याख्यानों से गुजर चुके हैं। सभी सुसमाचार दस आज्ञाओं में से प्रत्येक को कायम रखते हैं। सब्बाथ के बारे में शिक्षाएँ हैं; ईश्वर और केवल ईश्वर का सम्मान करने के बारे में शिक्षाएँ हैं। माता-पिता का आदर करने, लालच न करने की शिक्षाएँ हैं। इस प्रकार सुसमाचार कुल मिलाकर दस आज्ञाओं का समर्थन करता है, जो व्यवस्थाविवरण 5 में थे।

हमने यीशु और जंगल में उनके चालीस दिनों के बारे में बात की और मुझे यीशु के बारे में सोचना, वर्णन करना, मूर्त रूप देना और व्यवस्थाविवरण के शब्दों के बारे में सोचना अच्छा लगता है क्योंकि जब उन्हें परीक्षा में डाला जाता है, तो उनकी सभी प्रतिक्रियाएँ व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से सामने आती हैं। .

वह मूसा की तरह एक है. मैथ्यू के सुसमाचार से पर्वत पर उपदेश का यह विचार भी कुछ ऐसा है जिसका मैंने पिछले व्याख्यान में उल्लेख किया था। यीशु को एक महान भविष्यवक्ता की तरह दिखने के लिए स्थापित किया गया है जिसका व्यवस्थाविवरण 18 वादा करता है, और जैसे

मूसा इस्राएलियों के लिए एक बहुत प्रभावशाली व्यक्ति था, यीशु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित किया गया है जो मूसा की तरह है, जो ईश्वर के बीच मध्यस्थ है। और लोग. वह वह है जो आ सकता है और वास्तव में लोगों को ईश्वर की इच्छाओं के बारे में समझा सकता है।

व्यवस्थाविवरण और पॉल

जाहिर है, प्रेम और आज्ञाओं के पालन के बीच एक संबंध है। और इनमें से कुछ न केवल सुसमाचारों में दिखाई देते हैं बल्कि पॉल के लेखन में भी दिखाई देते हैं। या हम यह भी कह सकते हैं कि एक्ट्स की पुस्तक, ल्यूक-एक्ट्स, और फिर बाद में पॉल के लेखन से पता चलता है, वास्तव में वे ईश्वर की कृपा, ईश्वर के प्रेम पर काफी ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन हमेशा लोगों को कार्य करने के लिए कहते हैं। प्रकार में। हम रोमियों की पुस्तक के बारे में सोचते हैं, और हम जेम्स के पत्र के बारे में सोचते हैं; वे सभी इस तथ्य पर जोर देते हैं कि आप किसी चीज़ पर सिर्फ विश्वास नहीं करते हैं, यह सिर्फ दिमागी ज्ञान नहीं है, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिस पर आप विश्वास करते हैं, जो तब उन कार्यों द्वारा प्रदर्शित होता है जो आप बाहर जाते हैं और प्रतिक्रिया में करना चुनते हैं।

पॉल व्यवस्थाविवरण में बहुत पारंगत है, इसमें आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए। पॉल स्वयं कहता है कि वह फरीसियों का फरीसी है, जिसका अर्थ है कि उसने पुराने नियम का अधिकांश भाग कंठस्थ कर लिया होगा। उसने अपने समय के रब्बियों की बहुत-सी मौखिक शिक्षाएँ याद कर ली होंगी। वह पाठ से भली-भाँति परिचित होगा। वह न केवल व्यवस्थाविवरण के उद्धरणों का उपयोग करता है, बल्कि अपने स्वयं के कुछ लेखों की संरचना के लिए पुस्तक की संरचना का भी उपयोग करता है।

स्रोत

तो, जैसा कि हम देख सकते हैं, व्यवस्थाविवरण हर जगह है, और जेम्स मिचेनर की एक हालिया आधुनिक पुस्तक है। हाल से मेरा तात्पर्य यह है कि यह बाइबिल का पाठ नहीं है। यह अब तक कुछ दशक पुराना हो चुका है। किताब का नाम है, द सोर्स. और यह पुरातत्वविदों की कहानी है, एक प्राथमिक पुरातत्वविद् एक अमेरिकी है, और दूसरा एक इजरायली है। तो, मेरा मानना है

कि एक वास्तव में यहूदी है, और अमेरिकी कैथोलिक है। लेकिन यह कहानी इतिहास को खंगालने और इतिहास की परतों को उजागर करने के लिए इज़राइल की भूमि पर उनके एक साथ आने की एक काल्पनिक कहानी है। पुस्तक में दो पुरातत्वविदों के बीच वास्तव में दिलचस्प बातचीत है क्योंकि एक, अमेरिकी, इजरायली की ओर मुड़ता है और कहता है कि मुझे नहीं पता कि कोई भी व्यवस्थाविवरण की पुस्तक क्यों पढ़ना चाहेगा। और इज़राइली, यहूदी इज़राइली पुरातत्वविद्, मुड़ते हैं और कहते हैं, "आह, लेकिन जब मैं व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पढ़ता हूं, तो मैं अपने पूर्वजों के अतीत के भूतों को इस भूमि पर घूमते हुए देख सकता हूं।" यह पुस्तक हमारी पूजा के केंद्र में है।" और वह अमेरिकी से कहता है कि जाओ व्यवस्थाविवरण की पुस्तक चार बार पढ़ो और फिर वापस आओ और यह बातचीत करते हैं। और अमेरिकी जाता है और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक चार बार पढ़ता है और, अंत में, यह एहसास होता है कि यह न केवल यहूदी मान्यताओं के मूल में है, बल्कि यह उसकी ईसाई मान्यताओं के मूल में भी है।

निष्कर्ष

और इसलिए, जैसा कि हमने देखा है, व्यवस्थाविवरण अन्य लेखों, ऐतिहासिक लेखों, भविष्यवक्ताओं के लेखों और नए नियम के लेखों से मजबूती से जुड़ा हुआ है। यह सामान्य ज्ञान था.

और इसलिए फिर से, आपके लिए एक प्रोत्साहन के रूप में, जितना अधिक हम व्यवस्थाविवरण को पढ़ते और समझते हैं, उतना ही अधिक हम ईश्वर के हृदय और उस हृदय को समझते हैं जो वह अपने लोगों से रखने के लिए कह रहा है।

यह डॉ. सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह सत्र 13, व्यवस्थाविवरण और कैनन है।